E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

यमक अलंकार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

प्रकृति-

यह शब्दालंकार है।(शब्दालङ्कार का लक्षण है-'शब्दपरिवृत्त्यसहत्व' अर्थात् शब्द की परिवृत्ति (परिवर्तन) को न सह सकने का भाव। अर्थात् जो अलंकार शब्दविशेष की ही उपस्थिति में रहते हैं, उस शब्द का पर्याय रखते ही विनष्ट हो जाते हैं, शब्दालंकार कहे जाते हैं।)

व्युत्पत्ति-

'यमक' का व्युत्पतिलब्ध अर्थ है युग्म, जोड़ा या दो। यमक का अर्थ है-"यमौ द्वौ समजातौ तत्प्रकृतिर्यमकम्"। अर्थात् यम (जुड़वे) पैदा हुए दो जीवों की प्रतिकृति यमक है। इस अलंकार में एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति होती है परंतु अर्थ की भिन्नता के साथ। इस अलंकार में तुल्य आकारवाले भिन्नार्थक दो शब्दों की आवृत्ति के कारण ही इसके नाम की सार्थकता सिद्ध है। यमक में कवि का ध्यान आवृत्त शब्दों पर रहता है, उनके अर्थ पर नहीं; क्योंकि इसका चमत्कार शब्दगत होता है, अर्थगत नहीं। समतुल्य वर्णो के आवर्तन से यमक में विशेष प्रकार के चमत्कार की सृष्टि होती है।

इतिहास-

यमक अलंकार प्राचीनतम अलंकारों में से एक है। भरत के नाट्यशास्त्र में जिन चार अलंकारों का उल्लेख हुआ है, यमक उन चार अलंकारों में अन्यतम है। प्राचीन आचार्यों में उद्भट एवं नवीन आचार्यों में अप्पय दीक्षित तथा पंडितराज ने इसका उल्लेख नहीं किया है; शेष सभी आलंकारिकों ने यमक का निरूपण किया है।

लक्षण-

यमक का लक्षण प्रतिपादित करते हुए आचार्य मम्मट का अभिमत है-

अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः।

यमकम्.....।।

अर्थात् अर्थ के होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों पूर्वक्रम से पुनः श्रुति (पुनरावृत्ति) यमक अलङ्कार कहलाता है।

स्पष्टीकरण-

मम्मट ने पूर्वाचार्यों की स्थापनाओं का समाहार करते हुए नए विचार का प्रतिपादन किया। इनके अनुसार अर्थ होने पर भी, भिन्न अर्थ वाले वर्ण-समुदाय की उसी कम से पुनः श्रुति या आवृत्ति को यमक कहते हैं। इस परिभाषा में निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं-

वर्ण-समुदाय की आवृत्ति ही यमक है। इस लक्षण में लाटानुप्रास की अतिव्याप्ति हो जाती है, अतएव इसके निवारणार्थ परिभाषा में 'अर्थभिन्नानाम्' या भिन्नार्थकता का समावेश किया गया है। यमक में भिन्नार्थक वर्ण-समुदाय या पदों की आवृत्ति होती है। लक्षण में 'अर्थेसति' अर्थात् अर्थ होने पर भिन्न अर्थवाले वर्णसमुदाय की आवृत्ति में यमक होगा, ऐसा कहा गया है। इसमें केवल सार्थक पदों या वर्णसमुदाय की ही आवृत्ति में यमक होता है, निरर्थक वर्णसमुदाय की आवृत्ति में नहीं। आचार्य मम्मट ने केवल 'भिन्नार्थानाम्' का प्रयोग नहीं किया; क्योंकि उस स्थिति में केवल सार्थक पदों की ही आवृत्ति में यमक अलंकार होता और आवृत्त पद का दोनों ही स्थानों पर सार्थक होना अनिवार्य हो जाता। किंतु, मम्मट ने बताया कि यह आवश्यक नहीं कि आवृत्त वर्णसमुदाय दोनों ही स्थलों पर सार्थक हों। अतएव लक्षण में 'भिन्नार्थानां न रखकर 'अर्थेसति अर्थभिन्नानाम् का समावेश किया गया है।

वस्तुतः यमक के उदाहरण में-

क) कहीं दोनों पद सार्थक होते हैं।

ख) कहीं दोनों पद निरर्थक होते हैं।

ग) और कहीं एक पद सार्थक होता है और एक निरर्थक।

घ) यमक में आवृत्ति उसी क्रम में होनी चाहिए, जिस क्रम में पूर्ववर्ती पद प्रयुक्त हुआ है।जैसे पलाश-पलाश। 'दमो-मोद' को यमक नहीं कहा जा सकता है क्योंकि यहाँ आवृत्ति का क्रम बदल गया है।

वैशिष्ट्य-

यमक की आलोचना करनेवाले आचार्यों की संख्या अधिक है, तथापि कतिपय आलंकारिकों ने इसके प्रति प्रशंसा के भी उद्गार प्रकट किए हैं। ऐसे आचार्यों में जयदेव का नाम लिया जा सकता है। जयदेव यमक को 'कवि की प्रशंसा' के बीजांकुर से युक्त मानते हैं। कुछ अन्य काव्यशास्त्रियों ने इसे चित्रकाव्य का मूल कहकर इसके द्वारा कवि-रीति को सनाथ माना है।

उदाहरण-

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः।।

अर्थात् नूतन पलाशों (=पर्णों) वाले पलाश अर्थात् ढाक के वन से युक्त प्रभूत परागचूर्ण से परागत (व्याप्त) कमलों वाले, मृदुल (कोमल) तथा तान्त (म्लान) लताग्रभागों वाले और कुसुम समूह से सुरभित वसन्त को भगवान् श्रीकृष्ण ने रैवतक पर्वत पर अपने समक्ष रखा।

स्पष्टीकरण-

i) कहीं दोनों पद सार्थक हैं जैसे-

क) पलाश=पत्र, पलाश=वृक्षविशेष

ख) सुरभि=सुगन्धित, सुरभि=वसन्त ऋतु

ii) कहीं दोनों पद निरर्थक हैं, जैसे रभिंसु-रभिंसु

iii) कहीं एक पद सार्थक है और दूसरा निरर्थक-

क) 'लतान्त-लतान्त' में दूसरा लतान्त पद ही सार्थक है। पहले 'लतान्त' में 'लकार' मृदुल पद का अंश है।

ख) इसी प्रकार 'पराग-पराग' में बाद वाला पराग शब्द परागत का अंश होने से निरर्थक है

iv) उपर्युक्त पदों की आवृत्ति एक ही क्रम में हुई है।

काव्यशास्त्रियों का अभिमत है कि यमक का प्रयोग सदैव एक, दो अथवा चारों चरणों में करना चाहिए-मात्र तीन चरणों में नहीं-

"यमकन्तु विधातव्यं न कदाचिदपि त्रिपात्"

भेद-

यमक के भेदों की चर्चा करते हुए आचार्य मम्मट का कथन है-"पादतद्भागवृत्ति तद्यात्यनेकताम्" अर्थात् पादवृत्ति और उसके भाग (अंश) में होने से पादभागवृत्ति से यह यमक अनेक प्रकार का हो जाता है।